डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट साहित्य, व्याख्यान 6 शैली और सारांश

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन अपना न्यू टेस्टामेंट इतिहास और साहित्य, व्याख्यान 6, शैली और सारांश प्रस्तुत कर रहे हैं।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ें और शुरुआत करें। आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें और फिर हमने आखिरी कक्षा की अवधि समाप्त की, जो सोमवार या ऐसा ही कुछ दिन था।

ऐसा लगता है कि मेरा पूरा सप्ताह बर्बाद हो गया है, लेकिन सोमवार को हमने विविध साहित्यिक प्रकारों या रूपों, न्यू टेस्टामेंट में साहित्यिक शैलियों के बारे में थोड़ी बात करके समाप्त किया। हमने आख्यान के बारे में बात करना शुरू किया, जो गॉस्पेल और एक्ट्स की पुस्तक को बनाता है, हालाँकि एक्ट्स गॉस्पेल की तुलना में थोड़ा अलग प्रकार का साहित्य है। वे इस मायने में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं कि वे आख्यान हैं, कुछ पात्रों और उनके भाषणों और कुछ घटनाओं का चित्रण हैं।

हम दो अन्य प्रमुख साहित्यिक रूपों या साहित्यिक प्रकारों को देखेंगे जो न्यू टेस्टामेंट बनाते हैं। फिर से, हमने कहा कि इसके बारे में जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि नए नियम में साहित्यिक रूप और प्रकार शामिल हैं जो उन साहित्यिक रूपों और प्रकारों के अनुरूप हो भी सकते हैं और नहीं भी जिनका हम आज उपयोग करते हैं। हमें यह समझने की कोशिश करनी होगी कि पहली सदी में लेखक किस विधा में लिख रहे थे।

उन्होंने किन साहित्यिक रूपों का उपयोग किया और यह पुराने नियम के कुछ ग्रंथों को पढ़ने और उनकी व्याख्या करने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित कर सकता है? हम कथा शैली पर चर्चा समाप्त करेंगे, पत्रों या पत्रों के बारे में थोड़ी बात करेंगे, और फिर एक अंतिम साहित्यिक प्रकार के बारे में बात करेंगे, और उसके बाद गॉस्पेल के बारे में बात करना शुरू करेंगे। हालाँकि हम संभवतः सोमवार तक विशिष्ट सुसमाचार ग्रंथों या पुस्तकों के बारे में बात करना शुरू नहीं करेंगे। उम्मीद है, हम आज उनका परिचय देना शुरू कर सकते हैं।

आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें और फिर हम नए नियम के साहित्यिक प्रकारों के बारे में थोड़ी बात करेंगे। पिता, हम आपको उस विशेषाधिकार और अध्ययन की ज़िम्मेदारी के लिए धन्यवाद देते हैं जो हमारे लिए आपके रहस्योद्घाटन से कम नहीं है। मैं प्रार्थना करता हूं कि हमें नए नियम के पाठ की अधिक सराहना, जागरूकता और समझ होगी क्योंकि वे एक विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और भाषाई संदर्भ में तैयार किए गए थे, साथ ही यह पुष्टि करते हुए कि यह हमारे लिए कार्य करना जारी रखेगा। आज का दिन परमेश्वर के वचन से कम नहीं है।

मैं प्रार्थना करता हूं कि हम इसकी संपूर्ण समृद्धि और विविधता को उन दृष्टिकोणों से समझने में सक्षम होंगे। हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज हमारी चर्चा का मार्गदर्शन करेंगे और हमें आपके रहस्योद्घाटन में ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, इसलिए हमने गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन को देखने की तैयारी में कथा के बारे में थोड़ी बात की, जिनके बारे में हमने कहा कि वे नए नियम में व्यवस्थित या घटित होते हैं, न कि उनके कालानुक्रमिक क्रम में, जिस क्रम में वे लिखा गया। कम से कम मैथ्यू और शायद ल्यूक को पॉल के पत्रों और पॉल के पत्रों के बाद भी लिखा गया होगा, और यह संभव है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को उस क्रम में भी नहीं लिखा गया था। लेकिन इसके बजाय, नए नियम को अधिक तार्किक रूप से व्यवस्थित किया गया है।

लेकिन चार गॉस्पेल में लेखों का एक समूह शामिल है जो कथा शैली में फिट बैठता है। और जैसा कि हमने कहा, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पहली शताब्दी में इसे कैसे देखा गया होगा और इसे कैसे समझा गया होगा। पहली सदी की कथा या जीवनी में, गॉस्पेल अधिकांश भाग में, पहली सदी की ग्रीको-रोमन जीवनियों की श्रेणी में बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है।

गॉस्पेल और आधुनिक समय की जीवनियों के बीच अंतर यह है कि पहली सदी की जीवनियाँ, विशेष रूप से गॉस्पेल, आपको एक व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में किए गए हर काम का विस्तृत विवरण देने में रुचि नहीं रखती हैं। जीवन और वे सब कुछ जो उन्होंने कहा। लेकिन इसके बजाय, गॉस्पेल कहीं अधिक चयनात्मक प्रतीत होते हैं। अर्थात्, सुसमाचार वास्तव में एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से लिखे गए हैं।

और हम उस पर गौर करेंगे. जब हम चार सुसमाचारों को देखते हैं, तो एक चीज़ जो हम पूछने जा रहे हैं वह यह है कि चार सुसमाचार क्यों? आरंभिक चर्च ने उन सभी को यीशु मसीह के जीवन, शिक्षाओं और कार्यों की एक भव्य कथा और ऐतिहासिक विवरण में क्यों नहीं समेटा? लेकिन इसके बजाय, चर्च ने चार अलग-अलग गॉस्पेल को एक स्टैंड के रूप में अनुमति दी। तो, गॉस्पेल उन लेखकों द्वारा लिखे गए हैं जिनके पास एक धार्मिक बिंदु है, कुछ ऐसा है जिसे वे पार करना चाहते हैं, गॉस्पेल कहानी और यीशु के जीवन का विवरण।

और वे जो करते हैं वह यह है कि वे इसमें क्या शामिल करते हैं और अपनी बात कहने के लिए इसे कैसे रिकॉर्ड करते हैं, इसमें बहुत चयनात्मक होते हैं। हम जो प्रश्न पूछेंगे उनमें से एक यह है कि केवल मैथ्यू और ल्यूक में ही तथाकथित क्रिसमस कहानी क्यों है? केवल मैथ्यू और ल्यूक में ही यीशु के जन्म का विवरण क्यों है जबकि मार्क को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है? और ऐसा प्रतीत होता है कि जॉन ने इसे अपने सुसमाचार की शुरुआत में ही एक बहुत ही संक्षिप्त कथन या कविता में कैद कर लिया है। और फिर जब आप मैथ्यू और ल्यूक की तुलना करते हैं, तो उनकी क्रिसमस कहानियाँ बहुत अलग हैं।

ल्यूक के चरवाहे यीशु से मिलने आते हैं। मैथ्यू उस बारे में कुछ नहीं कहता। और इसके बजाय, उसे इस बात में अधिक रुचि है कि एक या दो वर्ष बाद ये जादूगर, ये विदेशी ज्योतिषी आयें और यीशु से मिलें।

तो वे ऐसा क्यों करते हैं? क्या चल रहा है? तो, हालाँकि, आप जो देख सकते हैं, वह पहली शताब्दी में एक कथा है या पहली शताब्दी में जीवनी है, विशेष रूप से गॉस्पेल में वर्णित, आपको जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के जीवन का विस्तृत विवरण देने में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसके बजाय, वे कहीं अधिक चयनात्मक थे। जिस धार्मिक बिंदु को वे समझने की कोशिश कर रहे थे, उसे संप्रेषित करने के लिए, लेखक उन घटनाओं में चयनात्मक होंगे जिन्हें उन्होंने दर्ज किया था और अक्सर उन्होंने उन्हें कैसे दर्ज किया था, इसलिए मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन के बीच आप जो अंतर देखते हैं, उसे ध्यान में रखते हुए।

और इस तथ्य को भी ध्यान में रखते हुए कि आपके पास ल्यूक के कुछ छोटे छंदों को छोड़कर, किसी भी गॉस्पेल में यीशु के प्रारंभिक बचपन के बारे में कुछ भी नहीं है, सिर्फ इसलिए कि वे आपको वह सब कुछ बताने में रुचि नहीं रखते हैं जो था यीशु के बारे में जानें. पहली सदी की ग्रीको-रोमन जीवनी के बारे में जानने योग्य दूसरी बात यह थी कि जब किसी ने अपने भाषण में जो कहा उसे रिकॉर्ड करने की बात आती है, तो पहली सदी में इसे संक्षेप में प्रस्तुत करना कहीं अधिक आम था, जैसा कि हम इसमें रुचि रखते हैं। कुछ उद्धरणों में डालना और किसी द्वारा कही गई हर बात का शब्द-दर-शब्द विवरण देना। इसके बजाय, ऐसा लगता है कि पहली सदी के लेखकों को किसी ने जो कहा, उसके अर्थ और सार को संक्षेप में प्रस्तुत करने में अधिक रुचि थी, किसी लेखक द्वारा कही गई सटीक क्रिया या शब्दों के बजाय आवाज को पकड़ना।

वास्तव में, यदि यीशु ने बड़े पैमाने पर अरामी भाषा में बात की और गॉस्पेल ग्रीक में लिखे गए हैं, तो हमारे पास वास्तव में यीशु ने जो कहा उसका अनुवाद है। और वास्तव में, जैसा कि हम मेरी अन्य कक्षाओं में बात करते हैं, यदि आप बैठते हैं और आधुनिक अनुवाद में यीशु के पहाड़ी उपदेश को पढ़ते हैं, तो संभवतः इसमें आपको मोटे तौर पर, मुझे नहीं पता, दस मिनट या इसलिए इसे पढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कितनी तेजी से, धीरे-धीरे या चिंतनपूर्वक पढ़ते हैं। मुझे सचमुच संदेह है कि यीशु ने उस दिन दस मिनट तक बात की थी।

अधिक संभावना है, पहाड़ी उपदेश इस बात का सटीक और पर्याप्त सारांश है कि यीशु ने क्या कहा था और यीशु वास्तव में क्या कहना चाह रहे थे। तो, गॉस्पेल में ऐसे समय होते हैं जहां शायद लेखकों में सटीक शब्द या शब्द के करीब होते हैं, खासकर यदि यीशु ने अरामी भाषा में बात की है और हमारे गॉस्पेल ग्रीक में हैं, तो हमारे पास यीशु ने जो कहा है उसका ग्रीक अनुवाद है। लेकिन उन उदाहरणों के अलावा, संभवतः यीशु के अधिकांश भाषण यीशु द्वारा कही गई बातों के अधिक सारांश, सटीक और पर्याप्त सारांश हैं।

और पहली शताब्दी में, किसी ने भी कुछ अलग नहीं सोचा होगा। यह कुछ-कुछ वैसा ही हो सकता है, उदाहरण के लिए, जब हमारी यहां गॉर्डन में एक संकाय बैठक होती है, तो मिनट्स लगभग दो या तीन पेज लंबे होते हैं, फिर भी बैठक पूरे एक घंटे तक चलती है। बोर्ड की बैठक में किसी ने जो कहा उसे मिनटों में संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कोई भी सचिव को दोष नहीं देगा।

जब तक यह सटीक और पर्याप्त रूप से जो कहा गया था उसे बताता है, मिनट बीत जाएंगे और कोई भी दूसरा विचार नहीं सोचेगा। यह कुछ-कुछ वैसा ही हो सकता है जैसा हम गॉस्पेल में पाते

हैं, जो इस बात का सारांश है कि यीशु ने क्या बताया था और उसने क्या सिखाया था, हालांकि फिर से, सटीक और पर्याप्त सारांश। इसलिए, जब बात आती है कि यह हमारे सुसमाचार पढ़ने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है, तो हम इस पर गौर करेंगे।

दूसरी शैली पत्र-पत्रिका है। यह वह हो सकता है जिससे हम अधिक परिचित हैं, लेकिन फिर भी, पहली सदी की पत्रियाँ उस चीज़ से भिन्न हो सकती हैं जो हम आज लिखते समय करते हैं। पहली शताब्दी में पत्रियाँ किसी भी प्रकार की जानकारी संप्रेषित करने का एक बहुत ही सामान्य तरीका थीं।

इनका उपयोग व्यापारिक लेन-देन के लिए किया जा सकता है। उनका उपयोग दार्शनिक ट्रैक्ट और इसके बीच की किसी भी चीज़ के लिए भी किया जा सकता है। इसलिए, आप किसी भी प्रकार की जानकारी तैयार करने और संप्रेषित करने के लिए एक पत्र का उपयोग कर सकते हैं।

अधिकांश लोग जिस चीज़ को नज़रअंदाज कर देते हैं वह है बाइबल की आखिरी किताब, प्रकाशितवाक्य की किताब, वास्तव में एक पत्र है। इसे एक पत्र के रूप में तैयार किया गया है। इसलिए, पहली शताब्दी में किसी भी प्रकार की जानकारी संप्रेषित करने के लिए पत्र का उपयोग किया जा सकता था।

इसे काफी अच्छे ढंग से स्टाइल भी किया गया था। यानी, इसका एक काफी सामान्य प्रारूप था जिसे पहली शताब्दी में एक लेखक अपनाता था। इसलिए, उदाहरण के लिए, जब आप पॉल के पत्रों को देखते हैं, तो उनमें से अधिकांश, हालांकि वे महत्वपूर्ण तरीकों से विचलित होते हैं, अधिकांश भाग के लिए, वे पहली शताब्दी के एक बहुत ही सामान्य प्रारूप और लिखने के तरीके का पालन करते हैं।

वास्तव में हमारे पास पहली शताब्दी के दौरान लिखे गए कई पत्र हैं जो उजागर हुए हैं, जो इस बात की गवाही देते हैं कि पॉल के पत्रों में पहली शताब्दी के पत्र कैसे दिखते थे। हालाँकि इससे भी अधिक हैं, पहली सदी के आम पत्रों से कम कुछ भी नहीं है जहाँ आप पत्र के रूप में किसी भी चीज़ के बारे में संवाद कर सकते हैं। पत्रों के बारे में कुछ अन्य बातें, नंबर एक, एक पत्र अक्सर वक्ता की उपस्थिति के लिए एक प्रकार का सरोगेट भी होता है।

इसलिए, यदि आपको किसी से कुछ महत्वपूर्ण बात कहनी है और आप उनकी उपस्थिति में नहीं हो सकते हैं, तो आप एक पत्र लिखेंगे, एक पत्र उसका विकल्प होगा। इसलिए, पत्र अक्सर पॉल के प्रेरितिक अधिकार के स्थानापन्न होते थे, और वह पाठकों से अपेक्षा करता था कि वे उन्हें उसी गंभीरता से लें जिस गंभीरता से वे पॉल को लेते थे यदि वह उन्हें व्यक्तिगत रूप से संबोधित करने के लिए उपस्थित होता। इसलिए, पत्र वक्ता की उपस्थिति के विकल्प के रूप में कार्य कर सकते हैं।

दूसरी बात भी उसी तरह है जैसे आज विभिन्न प्रकार के पत्र हैं, पहली शताब्दी में विभिन्न प्रकार के पत्र थे, और पॉल द्वारा लिखे गए कुछ पत्र ऐसे हैं जो पहली शताब्दी के बहुत ही सामान्य प्रकार से मिलते जुलते हैं। पत्र, और यह वास्तव में आपके पत्र को पढ़ने और व्याख्या करने के तरीके में

थोड़ा सा अंतर डालता है। जब हम उस तक पहुंचेंगे तो हम उस पर गौर करेंगे। लेकिन फिर भी, पत्र संचार का एक बहुत ही सामान्य तरीका था।

पॉल ने इन पत्रों या पत्र प्रारूप को नहीं बनाया था, वह केवल पहली शताब्दी के ग्रीको-रोमन परिवेश में सूचना संप्रेषित करने के एक मानक तरीके का पालन कर रहा था। इस प्रकार की पत्र-पत्रिका शैली शायद कुछ हद तक इब्रानियों की पुस्तक, 1 और 2 पतरस, यूहन्ना के पत्र, और यहूदा में भी परिलक्षित होती है, और जैसा कि मैंने कहा, यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य भी वास्तव में एक पत्र के रूप में है। अंतिम साहित्यिक प्रकार जिसमें वास्तव में केवल एक पुस्तक शामिल है, और वह रहस्योद्घाटन की पुस्तक है, एक सर्वनाश है।

जब हम सेमेस्टर के अंत में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्राप्त करेंगे तो हम इसके बारे में अधिक बात करेंगे क्योंकि मुझे विश्वास है कि जिस तरह से रहस्योद्घाटन के साथ अक्सर व्यवहार किया जाता है और कभी-कभी इसका दुरुपयोग किया जाता है, उससे बचने के लिए इस पुस्तक की साहित्यिक शैली को समझना महत्वपूर्ण और आवश्यक है। फिर से, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बस लिखी गई है, यह लेखक द्वारा प्राप्त की गई थी और पहली शताब्दी में एक बहुत ही सामान्य साहित्यिक रूप में लिखी गई थी, पत्र के साथ, एक साहित्यिक रूप जिसे जाना जाता है या जिसे हमने लेबल किया है एक सर्वनाश. मूल रूप से, सर्वनाश एक दूरदर्शी अनुभव का प्रथम-व्यक्ति आत्मकथात्मक विवरण था।

इसलिए, जब आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ते हैं, जो अध्याय 4 से शुरू होती है, तो जॉन कहता है, मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और फिर जॉन को ऊपर आने के लिए कहा गया और वह स्वर्ग चला गया। रहस्योद्घाटन की पुस्तक के लेखन से लगभग 200 साल पहले और बाद में, 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक लिखे गए सर्वनाशों में यह आम बात थी। तो, आप वास्तव में इनमें से कई सर्वनाशों का अंग्रेजी अनुवाद पा सकते हैं।

यदि आपकी रुचि हो तो मैं आपको उस दिशा में संकेत कर सकता हूं, लेकिन मुद्दा यह है कि जॉन की रहस्योद्घाटन की पुस्तक अद्वितीय नहीं है। यह यूं ही अचानक नहीं आया. वह लिखने की एक बहुत ही सामान्य विधि का पालन कर रहा है, ईश्वर से रहस्योद्घाटन प्राप्त करना, लेकिन फिर उसे अपने पाठकों के लिए रिकॉर्ड करना, जिसे सर्वनाश के रूप में जाना जाता है।

फिर, मूल रूप से, यह एक दूरदर्शी अनुभव का प्रथम-व्यक्ति विवरण है, और इसे आमतौर पर बहुत ही प्रतीकात्मक भाषा में संप्रेषित किया जाता है। यह अजीब जानवरों और छवियों और उस जैसी चीजों के प्रतीकों में संप्रेषित है, और कुंजी यह पता लगाने की कोशिश करना है कि लेखक कहां है, इन छवियों की पृष्ठभूमि क्या है। उनका क्या मतलब है? उन्होंने पहली सदी के पाठकों को क्या बताया होगा? 21वीं सदी में हमारे लिए उनका जितना अर्थ लगता है उतना नहीं है। इसलिए, जब हम वहां पहुंचेंगे तो हम रहस्योद्घाटन के बारे में अधिक बात करेंगे, लेकिन कम से कम नए नियम में, यह सर्वनाश का एकमात्र उदाहरण है।

हालाँकि, यह पहली शताब्दी में सर्वनाश का एकमात्र उदाहरण नहीं है। असंख्य थे. यह एक काफी सामान्य साहित्यिक प्रकार था जिससे पाठक तब परिचित होंगे जब उन्होंने पहली बार इसे पढ़ते हुए सुना होगा।

ठीक है, तो यह साहित्यिक प्रकारों की विविधता का एक छोटा सा स्वाद है। इस साहित्य के अंतर्गत भी विविध प्रकार के साहित्यिक स्वरूप विद्यमान हैं। उनमें से कुछ को हम देखेंगे।

उदाहरण के लिए, हम दृष्टांतों को देखने में कुछ समय बिताएंगे। एक दृष्टांत क्या है? यीशु की शिक्षा के सामान्य रूपों में से एक। फिर, पहली शताब्दी में दृष्टांत एक बहुत ही सामान्य साहित्यिक रूप या शिक्षण का साधन रहा होगा।

और इसलिए उनकी शिक्षा और सामग्री चाहे कितनी भी विशिष्ट क्यों न हो, उसका स्वरूप वही होगा जो पहली सदी के श्रोताओं और पाठकों के बीच सामान्य और पहचानने योग्य रहा होगा। इसलिए, जब हम अलग-अलग पुस्तकों के पास आते हैं, तो हम सवाल पूछेंगे कि साहित्यिक शैली या साहित्यिक प्रकार इस पुस्तक को देखने के हमारे तरीके और इसे पढ़ने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है? अब थोड़ा और करीब से देखने के लिए, मैं मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन जैसे विशिष्ट ग्रंथों की जांच शुरू करने से पहले गॉस्पेल के बारे में अधिक विशेष रूप से बात करना शुरू करना चाहता हूं। मैं बस इस संबंध में कुल मिलाकर कुछ टिप्पणियां करना चाहता हूं कि हम उनसे कैसे संपर्क करते हैं।

एक मुद्दा यह है कि क्या हम अपने सुसमाचारों पर भरोसा कर सकते हैं? और मेरा मतलब यह है कि क्या हम भरोसा कर सकते हैं कि जब हम सुसमाचार पढ़ते हैं तो वे हमें यीशु ने क्या किया और यीशु ने क्या कहा, इसका सटीक और विश्वसनीय विवरण प्रदान करते हैं? या क्या हमें उन्हें अधिक काल्पनिक या चर्च की मनगढ़ंत कहानी के रूप में समझना चाहिए जो उन्होंने सोचा था कि यीशु ने किया और कहा या वे यीशु से क्या करवाना और कहलवाना चाहते थे? तो, क्या हम सुसमाचार पर भरोसा कर सकते हैं? अर्थात्, क्या वे, कुछ हद तक, हमें यीशु की शिक्षाओं और उनके द्वारा किए गए कार्यों का विश्वसनीय और सटीक विवरण और जानकारी देते हैं? आप शायद सीएस लुईस के बारे में जानते होंगे। आप में से कुछ लोग सी.एस. लुईस की सुप्रसिद्ध त्रिलम्मा से परिचित हैं। मुझे लगता है कि उन्होंने इसके लिए एक किताब में तर्क दिया है, जिसे आप कई साल पहले ग्रेट कन्वर्सेशन क्लास से पहले इस्तेमाल करते थे, एक तरह की फ्रेशमैन सेमिनार-प्रकार की क्लास जिसे ईसाई धर्म, चरित्र और संस्कृति के रूप में जाना जाता है।

और जो किताबें आपने पढ़ीं, उनमें से एक, मुझे लगता है, पहली किताब सीएस लुईस की मेर क्रिस्चियनिटी थी। आपमें से कुछ लोगों ने शायद वह पढ़ा होगा। और मुझे लगता है कि यहीं वह उस चीज़ के लिए तर्क देता है जिसे लुईस की त्रिलम्मा कहा गया है।

यानी, जब आप गॉस्पेल में यीशु के बारे में वृत्तांत पढ़ते हैं और यीशु क्या दावा करते हैं, तो पता चलता है कि यीशु या तो झूठा था, पागल था, या वह भगवान था। अर्थात्, यीशु या तो झूठ बोल रहा था कि वह कौन है। जब यीशु ने ईश्वर का पुत्र होने का दावा किया और मानवता के पापों के लिए

मरने का दावा किया और कहा कि वह फिर से जी उठेगा, तो यीशु या तो झूठ बोल रहा था या शायद यीशु उसके दिमाग से बाहर था।

वह एक पागल था. वह नहीं जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा है। वह इतना भ्रमित हो गया था कि वह जो कह रहा था उसका वास्तविकता में कोई आधार ही नहीं था।

या, यीशु वही था जो उसने होने का दावा किया था। वह भगवान थे. और, निस्संदेह, लुईस का तर्क है कि यह बाद की बात है।

समस्या यह है कि लुईस ने चौथा खिलाड़ी छोड़ दिया। और वास्तव में, यह एक ऐसा प्रश्न है जो आपको इन तीनों से पूछने से पहले पूछना होगा। और वह यह है कि क्या गॉस्पेल किंवदंतियाँ हैं।

कोई यह दावा कर सकता है कि यीशु, हाँ, यीशु भगवान थे जैसा कि उन्होंने दावा किया था, लेकिन गॉस्पेल काल्पनिक, पौराणिक कथाएँ हैं जिन्हें गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। इसलिए, लुईस के झूठे, पागल या भगवान से निपटने से पहले हमें उस प्रश्न से निपटना होगा। वास्तव में, यह प्रश्न पूछने के कई प्रयास हुए हैं कि यीशु कौन थे? तो, यह आपके नोट्स में पहला प्रश्न है।

यीशु वास्तव में कौन था? एक बहुत ही लोकप्रिय तरीका, वास्तव में, इसे कुछ समय पहले ही इस तरह दिखने वाली एक किताब, डैन ब्राउन की द दा विंची कोड द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था। लेकिन, मुझे लगता है कि हमने पहले भी इसका उल्लेख किया है, लेकिन ब्राउन जो कह रहे थे वह वास्तव में अकादमिक हलकों में अक्सर जो किया जा रहा है उसका एक लोकप्रिय संस्करण था। और वह है यीशु को देखना, या गॉस्पेल को ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय खातों या यीशु के बारे में ऐतिहासिक खातों के रूप में नहीं देखना, बल्कि फिर से, अधिक पौराणिक या काल्पनिक प्रकार की शैली का अनुसरण करना।

इसलिए, गॉस्पेल हमें इस बात का ऐतिहासिक विवरण देने के लिए नहीं हैं कि यीशु कौन थे और उन्होंने क्या कहा था, बल्कि इसके बजाय, गॉस्पेल, ब्राउन के दृष्टिकोण और दूसरों के दृष्टिकोण में, प्रारंभिक चर्च के धर्मशास्त्र को और अधिक प्रतिबिंबित करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह प्रारंभिक चर्च की धर्मशास्त्र और सोच ही है जिसने यीशु को भगवान बनाया। वास्तव में, यीशु वास्तव में, बहुत से विद्वान सोचते हैं कि हम यीशु के बारे में वस्तुतः कुछ भी नहीं जान सकते हैं।

यदि आप सारी भूसी हटा दें, सुसमाचार के केंद्र में मौजूद ऐतिहासिक गिरी, तो मूल रूप से आप यीशु के बारे में इतना ही जानते हैं कि वह पहली शताब्दी का कोई व्यक्ति था जो फ़िलिस्तीन में घूम-घूम कर अच्छी बातें सिखाता था और अंत में उसे अपने विश्वास के लिए मौत की सज़ा दी गई थी। . यीशु के बारे में हम बस इतना ही जान सकते हैं। बाकी सब कुछ मूल रूप से, यीशु के इस छोटे से अंश को चर्च के विश्वास के आधार पर बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है और इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है।

दूसरे शब्दों में, सुसमाचार यह प्रतिबिंबित नहीं करते कि यीशु कौन थे। वे प्रतिबिंबित करते हैं कि चर्च का मानना था कि वह कौन था, चर्च ने उसे क्या सिखाया था और चर्च ने उसके बारे में क्या

सोचा था। तो, यीशु वास्तव में ईश्वर का पुत्र नहीं था जो मानवता के पापों के लिए मर गया और मृतकों में से जीवित हो गया, इसके बजाय, वह स्वर्ग से आया था, जो ईश्वर का अवतार था।

इसके बजाय, यह फिर से एक तरह से चर्च के विश्वास को प्रतिबिंबित कर रहा है। चर्च ने यही सोचा था कि वह वही है। लेकिन यदि आप इसे हटा दें, तो आपके पास केवल एक इंसान बचेगा जिसने पहली सदी में अच्छी बातें सिखाईं और जिस बात पर उसने विश्वास किया, उसके लिए उसे मौत की सज़ा दे दी गई।

तो, सवाल यह है कि क्या गॉस्पेल, चर्च के विश्वास का प्रतिबिंब हैं और वे सोचते थे कि यीशु कौन थे, या क्या गॉस्पेल वास्तव में हमें यीशु ने क्या सिखाया और वह वास्तव में कौन थे, इसके बारे में विश्वसनीय और ऐतिहासिक रूप से सत्यापन योग्य जानकारी प्रदान करते हैं। ? अर्थात्, क्या हम सुसमाचार पर भरोसा कर सकते हैं? क्या वे हमें मसीह का सटीक चित्र प्रदान करते हैं कि वह कौन थे और उन्होंने क्या किया? या क्या गॉस्पेल केवल चर्च के धर्मशास्त्र, उनके विश्वास और उनकी सोच का प्रतिबिंब हैं? और वे प्रतिबिंबित करते हैं कि चर्च ने यीशु को कौन बनाया था। यह आपके नोट्स में एक अन्य प्रश्न, चर्च के इतिहास का पुनर्निर्माण, के साथ भी शामिल है। इस तस्वीर के साथ, यीशु का एक चित्र जिसके बारे में हम वस्तुतः कुछ भी नहीं जान सकते सिवाय इसके कि चर्च ने उसे क्या बनाया और वे उसे क्या मानते थे, यह है कि अक्सर चर्च के इतिहास को इस तरह दिखने के लिए पुनर्कल्पित किया जाता है।

दरअसल, आरंभिक चर्च की पहली तीन या चार शताब्दियों में ईसा मसीह के बारे में कोई एक दृष्टिकोण नहीं था। विभिन्न ईसाई धर्म थे। आप अपने नोट्स में देखेंगे कि मेरे पास बार्ट एहरमन नामक एक व्यक्ति का नाम है और उसके बगल में उसके कार्यों में से एक का शीर्षक है जो कि लॉस्ट क्रिस्चियनिटीज़, बहुवचन है।

तो, वह जो कह रहा है वह यही है, और बहुत सारे विद्वान यह कह रहे हैं कि पहली शताब्दी में ईसाई धर्म बहुत बहुलवादी था। ईसाई धर्म या ईसा मसीह कौन थे, इसके बारे में कोई एक प्रमुख दृष्टिकोण नहीं था और यह बाद में ही सामने आया। कई शताब्दियों के बाद, विजेताओं, सबसे शक्तिशाली, ने फैसला किया कि ईसाई धर्म कैसा दिखेगा, और यहां हम यीशु मसीह के बारे में क्या कहने जा रहे हैं।

और इसलिए फिर, जो हम गॉस्पेल में पाते हैं वह केवल ईसाई धर्म के एक तत्व का प्रतिबिंब है और वे सोचते थे कि यीशु कौन थे, लेकिन यह एकमात्र नहीं है और इस दृष्टिकोण के अनुसार यह निश्चित रूप से प्रमुख नहीं है। अब हम इसका मूल्यांकन कैसे करें? सबसे पहले, मुझे नहीं पता कि मेरे पास आपके नोट्स में यह है या नहीं। सबसे पहले, मूल्यांकन के माध्यम से, जब आप नया नियम पढ़ते हैं तो मुझे ऐसा लगता है, यह सच नहीं है कि ईसाई धर्म ने विभिन्न दृष्टिकोणों को सहन किया और ईसाई धर्म के सही दृष्टिकोण या यीशु मसीह के सही दृष्टिकोण में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

नए नियम के दस्तावेजों को पढ़ें और ध्यान दें कि वे झूठ या त्रुटि के विपरीत सत्य को संरक्षित करने में कितनी रुचि रखते हैं। उदाहरण के लिए, हम देखेंगे कि नए नियम के कई दस्तावेज़

वास्तव में ईसा मसीह के विचलित विचारों या ईसाई जीवन के विकृत विचारों के जवाब में लिखे गए थे। तो, यह सच नहीं है कि चर्च को जो सच था उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी या उसने बहुत पहले से ही विभिन्न विचारों को सहन कर लिया था।

पहले से ही नए नियम के दस्तावेज़ों में, आपको यीशु मसीह के बारे में गलत दृष्टिकोण के विपरीत और ऊपर जो सच था उसके बारे में चिंता मिलती है। दूसरे, यह दृष्टिकोण भी इतिहास और धर्मशास्त्र के बीच इस झूठे द्वंद्व के साथ संचालित होता प्रतीत होता है। यदि नए नियम का कोई लेखक धर्मशास्त्र लिख रहा होता, तो वह इतिहास नहीं लिख रहा होता जैसा अक्सर होता है।

लेकिन फिर, मुझे नए नियम, विशेषकर सुसमाचार लेखन को समझने के लिए यह एक नाजायज दृष्टिकोण लगता है। सिर्फ इसलिए कि उन्होंने धर्मशास्त्र लिखा, सिर्फ इसलिए कि उनके पास एक निश्चित दृष्टिकोण और विचारधारा थी जिसे वे संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे थे, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने तथ्यों को विकृत किया या तथ्यों के साथ तेजी से खिलवाड़ किया। तो, यह सच नहीं है कि सिर्फ इसलिए कि कोई व्यक्ति धर्मशास्त्र लिख रहा है, इसलिए उन्हें इतिहास में कोई दिलचस्पी नहीं है।

फिर, हमने देखा है कि नए नियम के लेखक केवल इतिहास दस्तावेज़ नहीं लिख रहे हैं। वे धार्मिक दस्तावेज़ लिख रहे हैं। वे मसीह को एक निश्चित तरीके से चित्रित करने में रुचि रखते हैं।

लेकिन साथ ही, यह निष्कर्ष निकालना जरूरी नहीं है कि उन्होंने इतिहास को गलत समझा होगा या उन्हें यीशु की शिक्षाओं और उन्होंने जो किया, उसके ऐतिहासिक रूप से सटीक विवरण में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए, इतिहास और धर्मशास्त्र के बीच ऐसा संबंध बनाना गलत है जैसे कि वे एक साथ अस्तित्व में नहीं रह सकते। अंत में, चर्च, जब आप सुसमाचार पढ़ते हैं तो इस बात का प्रमाण मिलता है कि चर्च यीशु मसीह के जीवन और शिक्षाओं को सटीक रूप से चित्रित करने में रुचि रखता था।

पहली सदी में चश्मदीदों पर निर्भरता और उनकी मौजूदगी बिल्कुल भी नहीं रही होगी। कम से कम एक सुसमाचार लेखक, ल्यूक, हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि वह अपने सुसमाचार के लेखन के लिए उस पर निर्भर है। उन्होंने स्पष्ट रूप से उन प्रत्यक्षदर्शियों की उपस्थिति का उल्लेख किया है जिन पर उन्होंने अपना सुसमाचार लिखते समय भरोसा किया था।

तो, प्रत्यक्षदर्शियों और अन्य संकेतकों की उपस्थिति से पता चलता है कि चर्च को इस बात में दिलचस्पी थी कि सुसमाचार ईसा मसीह के महत्व, उनके जीवन और मृत्यु और शिक्षाओं को धार्मिक रूप से कैसे दर्ज कर रहे हैं। साथ ही, वे इस बात को सटीक रूप से संरक्षित करने में भी रुचि रखते हैं कि यीशु ने क्या किया और सिखाया, न कि एक ऐसा वृत्तांत गढ़ना जो केवल यह दर्शाता हो कि चर्च क्या मानता था और जरूरी नहीं कि यीशु ने स्वयं क्या सिखाया और सोचा हो। इसलिए, हमने शुरुआत में ही सवाल उठाया, क्या हम अपने सुसमाचारों पर भरोसा कर सकते हैं? और फिर, सीएस लुईस की त्रिलम्मा से पहले, यीशु या तो झूठा था, पागल था, या भगवान था, हमें पूछना होगा, ठीक है, क्या सुसमाचार किंवदंती हो सकते थे? मैंने आपको सुझाव दिया है कि इसके बजाय, हम अपने सुसमाचारों पर भरोसा कर सकते हैं।

सबसे पहले, जैसा कि मैंने कहा, प्रत्यक्षदर्शियों की उपस्थिति होती, जिनसे परंपरा और शिक्षण और लेखन को नियंत्रण में रखने के लिए परामर्श लिया जा सकता था। इसलिए, चश्मदीदों की मौजूदगी से पहली शताब्दी में, विशेषकर सुसमाचारों में, केवल मनगढ़ंत कहानियों को सच बताना मुश्किल हो जाता। वास्तव में, कभी-कभी मैं इस उदाहरण का उपयोग करता हूं और यह उदाहरण मैं क्रेग ब्लॉमबर्ग से उधार लेता हूं जो अगले वर्ष जब मैं डेनवर सेमिनरी में पढ़ाऊंगा तो वह मेरे सहयोगी होंगे।

लेकिन क्रेग ब्लॉमबर्ग, जो प्रसिद्ध हैं, मैं आपके नोट्स में उनकी पुस्तक को सुसमाचार की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के लिए एक बहुत ही उपयोगी संसाधन के रूप में संदर्भित करता हूं। एक सामान्य सादृश्य जिसका उपयोग बहुत से विद्वान यह दिखाने के लिए करते हैं कि सुसमाचार नहीं थे, कि पौराणिक सामग्री संबंधी अशुद्धियाँ, वगैरह-वगैरह, टेलीफोन पर बातचीत का खेल है। हो सकता है कि आपने उसे किसी सेटिंग में बजाया हो, शायद यहां गॉर्डन में नहीं।

लेकिन अगर मैंने शुरुआत की और मैंने आपके कान में कुछ ऐसा फुसफुसाया जिसे कोई और नहीं सुन सके और आप उसे आगे बढ़ा दें, तब तक, अगर हमारे पास समय होता, तो हम यह कर सकते थे और आप देख सकते थे कि यह कैसे काम करता है। जब तक यह पीछे की ओर आया, यह आम तौर पर मैंने जो कहा था उससे पूरी तरह से अलग हो गया और हर कोई खूब हंसा क्योंकि यह कभी-कभी हास्यास्पद हो जाता है और यह मैंने जो कहा था उसके करीब भी नहीं है। और इसे अक्सर सुसमाचारों के साथ जो होता है उसके सादृश्य के रूप में देखा जाता है।

जैसा कि आप जानते हैं, यह सत्य है कि सुसमाचारों में हमारे पास जो भी सामग्री है, उसका अधिकांश भाग मौखिक रूप से दिया गया है। इस बात के प्रमाण हैं कि इसमें से कुछ को लिखा गया होगा, और सुसमाचार लेखकों को कुछ लिखित सामग्री तक पहुंच प्राप्त होगी, लेकिन यीशु की बहुत सारी शिक्षाएँ मौखिक रूप से पारित की गई होंगी और कभी-कभी हमारे लिए इसकी कल्पना करना मुश्किल होता है। हमारे अत्यधिक इलेक्ट्रॉनिक और तकनीकी युग में जहां हर चीज़ ईमेल या उस जैसी किसी चीज़ या फ़ेसबुक या किसी अन्य माध्यम से प्रसारित की जाती है। लेकिन पहली शताब्दी में, बहुत सारी जानकारी मौखिक रूप से प्रसारित की गई होगी और यीशु की बहुत सी शिक्षाएँ संरक्षित की गई होंगी और मौखिक रूप से प्रसारित की गई होंगी।

वास्तव में, पौलुस हमें बताता है, कि प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि इस तरह उसने सुसमाचार प्राप्त किया, यह उसे मौखिक रूप से दिया गया था। लेकिन कुछ लोग इसे लेते हैं और वे टेलीफोन की इस उपमा का उपयोग करते हैं, यानी, फिर से, अगर मैं आपसे कुछ फुसफुसाता हूं और आप कमरे के अंत तक पहुंचते-पहुंचते उसे बता देते हैं, तो यह हास्यास्पद लगता है और कुछ लोग कहेंगे सुसमाचार के साथ यही हुआ। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, इसे जोड़ा गया होगा और शायद गलत समझा गया होगा और इसलिए जब तक यह मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन तक पहुंचता है, तब तक वे जो लिखते हैं वह स्पष्ट रूप से अलंकृत और जोड़ा जाने वाला होता है और जो वास्तव में होता है उससे बहुत अलग होता है। घटित।

फिर से, क्रेग ब्लॉमबर्ग का कहना है कि उस सादृश्य के साथ एकमात्र समस्या यह है कि एक बेहतर सादृश्य प्रत्यक्षदर्शियों की उपस्थिति के कारण होगा और शायद इसे नियंत्रण में रखने के

लिए अन्य लिखित सामग्री भी होगी। एक बेहतर सादृश्य यह होगा कि हर सातवां व्यक्ति जो मैंने कहा था, अब खड़ा हो जाए और मुझे बताओ कि मैंने क्या कहा। और यदि वे गलत हैं, तो मैं उन्हें सुधार सकता हूं और फिर वे शुरू हो जाते हैं और वे सात और से गुजरते हैं और फिर मैं उस व्यक्ति से कहूंगा, खड़े हो जाओ और मुझे बताओ कि तुमने क्या सुना। और फिर, यदि यह गलत होता, तो मैं यह सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सही करने में सक्षम होता कि अंतिम उत्पाद काफी हद तक सही होगा और जो मैंने कहा था उसका सटीक प्रतिबिंब होगा।

इसलिए, चश्मदीदों की उपस्थिति ने संभवतः परंपरा को सभी के लिए स्वतंत्र और यीशु कौन थे, इसका गलत चित्रण बनने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गॉस्पेल के बीच समझौता दिलचस्प है, जबकि कई लोग गॉस्पेल में विसंगतियों, तथाकथित विसंगतियों या मतभेदों को इंगित करने में जल्दबाजी करते हैं, दिलचस्प बात यह है कि मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन के बीच समानताएं और समझौते हैं जो इंगित करते हैं सामग्री के अनियंत्रित हस्तांतरण के बजाय एक स्थिर परंपरा की ओर। तथ्य यह है कि बहुत सी जानकारी की ऐतिहासिक रूप से पुष्टि की जा सकती है, मैं आपको एक पुस्तक की ओर इंगित करूंगा जो उनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर देगी।

और जब हमें एहसास होता है और जब हम स्वयं गॉस्पेल की प्रकृति की अनुमति देते हैं, फिर से, जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं और ध्यान में रखते हैं कि गॉस्पेल आपको शब्द-दर-शब्द का सटीक विवरण देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं यीशु ने जो कुछ कहा और वे आपको यीशु द्वारा कही गई हर बात की विस्तृत जीवनी देने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, जब हमें एहसास होता है कि लेखक यीशु के भाषण का सारांश दे सकते हैं, जब हमें एहसास होता है कि कभी-कभी वे यीशु के अर्थ और महत्व का अर्थ निकाल सकते हैं यीशु ने जो कुछ किया, जब हम उन्हें पहली शताब्दी में लेखन के स्वीकार्य मानकों के आलोक में मापते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि इस प्रश्न का उत्तर, क्या हम अपने सुसमाचारों पर भरोसा कर सकते हैं, एक शानदार हाँ है। और मैं, फिर से, मैंने गॉस्पेल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर सबसे उपयोगी पुस्तकों में से एक, क्रेग ब्लॉमबर्ग की उस नाम की एक पुस्तक को पृष्ठ के निचले भाग में सूचीबद्ध किया है, जो कई अंशों से होकर गुजरती है और उनकी जांच करती है, विशेष रूप से गॉस्पेल के वे अंश जो स्पष्ट रूप से विरोधाभासी हैं या विरोधाभासी प्रतीत होते हैं और वह प्रशंसनीय समाधान प्रदान करते हैं जो प्रदर्शित करते हैं कि गॉस्पेल की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल मनगढ़ंत बातें या चर्च ने जो सोचा था उसके प्रतिबिंब के रूप में देखने की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल चर्च के विश्वास के प्रतिबिंब हैं, जो वास्तविकता में, ऐतिहासिक वास्तविकता में निहित नहीं हैं, लेकिन यह क्रेग ब्लॉमबर्ग द्वारा गॉस्पेल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता है।

दुर्भाग्यवश, मूल प्रकाशन दिनांक 1987 था। पिछले कुछ वर्षों में इसमें संशोधन किया गया है, इसलिए एक संशोधित संस्करण है। मैंने इसे प्रतिबिंबित करने के लिए अभी तक अपने नोट्स अपडेट नहीं किए हैं।

ठीक है, अब तक कोई प्रश्न? और भी बहुत कुछ है जो कहा जा सकता है। मैंने इसे बहुत पीड़ादायक संक्षिप्त तरीके से संक्षेप में प्रस्तुत किया है, लेकिन कोई अन्य प्रश्न? फिर से, मैं

आपको सलाह दूंगा कि यदि आप इसे और अधिक आगे बढ़ाने में रुचि रखते हैं तो आप ब्लॉमबर्ग की पुस्तक देखें। हाँ? ज़रूर, ऐसा ही होगा।

मैं बस सोच रहा हूं कि अगर मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जवाब देने जा रहा हूं जो यह नहीं सोचता कि यह मामला है, तो यह वास्तव में मुझे यह कहने के लिए कहीं नहीं मिलेगा, ठीक है, यह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा गया है, इसलिए यह है शुद्ध। ऐसे व्यक्ति के लिए जो इस पर विश्वास नहीं करता है, मैं इनमें से कुछ अन्य चीजों को देखूंगा, लेकिन निश्चित रूप से, मैं इस बात से सहमत होऊंगा कि इन सबके पीछे भगवान की आत्मा है जो लेखकों का मार्गदर्शन करती है, जैसा कि गॉस्पेल के दावों में से एक भी है। , कि परमेश्वर की आत्मा लेखकों का मार्गदर्शन कर रही है ताकि वे मानवता को छीने बिना, क्या उत्पन्न करें, फिर से, ल्यूक 1:1-4 पढ़ें। ल्यूक ने ग्रंथसूची संकलित करने की पहली शताब्दी की एक बहुत ही मानवीय प्रक्रिया से गुज़रा, लेकिन साथ ही, आप बिल्कुल सही हैं, यह महसूस करते हुए कि पवित्र आत्मा ने उस प्रक्रिया के माध्यम से काम किया ताकि अंतिम परिणाम हमारे लिए भगवान के वचन से कम न हो।

ठीक है, गॉस्पेल के बारे में सामान्य तौर पर कहने के लिए एक और बात है, और वह यह है कि जब आप विशेष रूप से मैथ्यू, मार्क और ल्यूक को पढ़ते हैं, तो जॉन थोड़ा अलग होता है। हम इस बारे में बात करेंगे कि जब हम जॉन के गॉस्पेल, चौथे गॉस्पेल पर पहुंचेंगे, तो हम सवाल पूछेंगे कि यह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक से इतना अलग क्यों दिखता है? आप पाते हैं, न केवल भाषा बहुत अलग है, बल्कि आपको जॉन में यीशु द्वारा सिखाए गए बहुत सारे विवरण और चीजें मिलती हैं जो आपको मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में कहीं नहीं मिलती हैं। तो, हम सवाल पूछेंगे कि जॉन अन्य तीन गॉस्पेल से इतना अलग क्यों है? लेकिन जिस प्रश्न पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं वह यह है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, पहले तीन गॉस्पेल, एक-दूसरे से इतने समान क्यों हैं? उम्मीद है, आप समझ गए हैं, आपने अपना नया नियम पढ़ना जारी रखा है, और इसका मतलब है कि आप उम्मीद कर रहे हैं कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक पहले ही पढ़ चुके हैं, और उम्मीद है, जब आप इसे पढ़ते हैं तो देजा वु की भावना होती है यानी, जब तक आप ल्यूक से मिलते हैं, ऐसा लगता है कि, यार, मैंने इस सामग्री को पहले ही दो बार देखा है।

यह लगभग कभी-कभी दोहराया जाता है, क्योंकि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच काफी व्यापक ओवरलैप है, न केवल उनके द्वारा बताई गई सामग्री और क्रम में, बल्कि कई बार शब्दों में भी, जिस तरह से गॉस्पेल को वाक्यांशित किया जाता है, और जिस तरह से चीजों को एक साथ रखा जाता है. तो यह वही है जो ज्ञात है, या जिसे विद्वान कहते हैं, और उम्मीद है, आपने इसे अपनी पाठ्यपुस्तक से उठाया है, इसे ही विद्वान सिनोप्टिक समस्या कहते हैं। अर्थात्, सिनोप्टिक समस्या एक ऐसा शब्द है जो बताता है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच क्या संबंध है। हम इस तथ्य को कैसे समझ सकते हैं कि जब इन तीन गॉस्पेल को एक साथ देखा जाता है, तो ये तीन गॉस्पेल, एक साथ देखने या देखने के लिए समानार्थी होते हैं, जब एक साथ देखा जाता है, तो ये तीन गॉस्पेल एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं?

आप इसका हिसाब कैसे देंगे? आप मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानताओं को कैसे समझाते हैं? फिर, यह केवल घटनाओं का क्रम नहीं है, उनमें मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के कई खंडों के सटीक शब्दों तक, कुछ समान सामग्री शामिल है। जब मैथ्यू, मार्क और ल्यूक किसी निश्चित

घटना या यीशु के कुछ कथन का उल्लेख कर रहे हैं, तो शब्द लगभग समान हैं। यह इतना करीब है कि अगर मुझे आपसे तीन शोध पत्र मिले जो मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के शब्दों के समान हों, तो मैं शायद आपको फोन करूंगा और पूछूंगा कि क्या हो रहा है क्योंकि मुझे किसी तरह के सहयोग पर संदेह होगा।

तो, सवाल यह है कि हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानता को कैसे समझाएं? यहाँ एक उदाहरण है. यह वह पद है जो आगे बढ़ता है... मैथ्यू, मार्क और ल्यूक सभी यीशु के रूपान्तरण को दर्ज करते हैं। याद रखें, प्रत्येक गॉस्पेल के लगभग आधे रास्ते में, यीशु पीटर, जेम्स और जॉन के साथ एक पहाड़ पर जाता है, और वह उनके सामने बदल गया या रूपांतरित हो गया, जिसे तीनों गॉस्पेल में रूपान्तरण के रूप में जाना जाता है।

मैथ्यू 17.1 में इस तक पहुंचने वाली कविता, और छह दिनों के बाद, यीशु ने पीटर, जेम्स और जॉन, उसके भाई को अपने साथ लिया, और उन्हें अकेले एक ऊंचे पहाड़ पर ले गए। अब मैं चाहता हूं कि आप ध्यान दें कि यह यीशु का उद्धरण नहीं है। आप कभी-कभी बहस करने में सक्षम हो सकते हैं, ठीक है, यदि वे यीशु के उद्धरणों में समान थे, तो इसका मतलब यह था कि उनके पास समान सामग्री तक पहुंच थी।

वे सभी यीशु को शब्दशः उद्धृत कर रहे थे। लेकिन यह कोई उद्धरण नहीं है. यह मैथ्यू की अपनी कथा का हिस्सा है।

उन्होंने ये लिखा. वह किसी और के शब्द को उद्धृत नहीं कर रहा है. यह उनका कथात्मक विवरण है, जो यीशु के रूपान्तरित होने की घटनाओं तक ले जाता है।

यहाँ मार्क, अध्याय 9 है, और छह दिनों के बाद, यीशु ने पीटर, जेम्स और जॉन को अपने साथ लिया, और उन्हें अकेले एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया। यह तो दिलचस्प है. मुझे याद नहीं आ रहा कि मैं किस अनुवाद का अनुसरण कर रहा हूँ।

यह मेरा अपना हो सकता है, लेकिन मैं यह भी प्रतिबिंबित करने का प्रयास कर रहा हूं कि ग्रीक पाठ कैसा दिखेगा। लेकिन आप मार्क और मैथ्यू को देखते हैं, और जो महत्वपूर्ण है, वह किसी के कहे का उद्धरण नहीं है, बल्कि यह स्वयं लेखकों की कथात्मक टिप्पणियाँ हैं। यहाँ ल्यूक है.

क्षमा करें यदि मैं आपमें से कुछ लोगों के लिए यहां थोड़ा निराश हो रहा हूं। अब, इसके लगभग आठ दिन बाद, ध्यान दें कि ल्यूक आठ दिनों का उपयोग करता है। अभी हम इस बात पर नहीं जा रहे हैं कि वह ऐसा क्यों करता है, लेकिन वह अपने साथ पतरस, और यूहन्ना, और याकूब को ले गया, और प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चला गया।

तो, ल्यूक के पास यह थोड़ा अलग है, लेकिन फिर भी, यह दिलचस्प है कि उसके पास आठ दिनों के संदर्भ का लगभग एक ही क्रम है, पीटर, जेम्स और जॉन का उल्लेख है, हालांकि वह जेम्स और जॉन को बदल देता है, और फिर तथ्य यह है कि वह एक पहाड़ पर चढ़ गया। लेकिन ल्यूक ने आगे कहा कि वह प्रार्थना करने गया था, जो दिलचस्प बात यह है कि यीशु का प्रार्थना करना ल्यूक में एक बहुत ही सामान्य विषय है। आप पाते हैं कि इस पर बार-बार ज़ोर दिया गया है।

तो यह इस बात का कारण हो सकता है कि ल्यूक के पास यह क्यों है और दूसरों के पास नहीं है। लेकिन हम इसका हिसाब कैसे दें? और यह सिर्फ यह कविता नहीं है. यह सब मैथ्यू, मार्क और ल्यूक पर है।

फिर, अगर मेरे पास तीन पेपर होते जिनमें मौखिक समानता उतनी ही होती जितनी मुझे इन तीन छंदों में मिलती है, तो मुझे यह पता लगाने के लिए आपसे और शायद डीन से बातचीत करनी होगी कि क्या हुआ। या मैं कह सकता हूं कि आप इसे सेफअसाइन में सबमिट कर दें और यह इसे पकड़ लेगा या ऐसा ही कुछ। लेकिन फिर, यह सिर्फ ये तीन श्लोक नहीं हैं।

यह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में व्यापक है। और सवाल यह है कि क्या हो रहा है और हम इसे कैसे समझाएं? इसे ही सिनोप्टिक समस्या के रूप में जाना जाता है। हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, तीन दस्तावेज़ों के बीच संबंधों को कैसे समझा सकते हैं जो न केवल घटनाओं के क्रम बल्कि शब्दों, यहां तक कि शब्दों में भी ऐसी आश्चर्यजनक समानताएं प्रकट करते हैं?

कई प्रयास किए गए हैं, और यह आपकी नोटबुक में कौन किसका उपयोग कर रहा है के अंतर्गत है। पहला यह है कि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि इस समानता के बावजूद, सुसमाचार वास्तव में एक दूसरे से स्वतंत्र हैं। अर्थात्, वे एक-दूसरे के बारे में कोई जानकारी न रखते हुए स्वतंत्र रूप से लिखे गए थे।

इसे समझने के कुछ तरीके हैं। कुछ लोगों ने इसका श्रेय केवल पवित्र आत्मा की प्रेरणा को दिया है क्योंकि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक पवित्र आत्मा से प्रेरित थे, जिस पर मेरा विश्वास है, यही समानता का कारण है। उस दृष्टिकोण के साथ समस्या यह है कि मतभेदों का क्या? इन समानताओं के बावजूद, आप जानते हैं, यहाँ क्या हुआ? क्या पवित्र आत्मा थक गया था और ल्यूक को वह सब कुछ समझ नहीं आया जो पवित्र आत्मा कहना चाहता था या क्या हुआ? इसलिए, यह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में पाए जाने वाले कुछ अंतरों की व्याख्या नहीं करता है।

तो हां, मैं पुष्टि करता हूं कि पवित्र आत्मा ने इन दस्तावेजों को प्रेरित किया है, फिर भी क्या यह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानता का कारण बनता है? दूसरा दृष्टिकोण यह है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की एक सामान्य मौखिक परंपरा तक पहुंच थी। याद रखें कि हमने कहा था कि बहुत सारी सुसमाचार सामग्री मौखिक रूप से पारित की गई थी जब तक कि इसे अंततः मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन में लिखने के लिए प्रतिबद्ध नहीं किया गया था। इसलिए, कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक एक-दूसरे से स्वतंत्र थे, लेकिन उन्होंने उसी मौखिक परंपरा को अपनाया जो उन्हें दी गई थी।

और यह मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानता का कारण बनता है। यह संभव है। हालाँकि, अधिकांश नए नियम के छात्र और विद्वान किसी प्रकार की साहित्यिक निर्भरता या संबंध देखना पसंद करते हैं।

अर्थात्, सुसमाचारों में से एक ने पहले लिखा और अन्य दो ने उस सुसमाचार का उपयोग किया, या उस जैसी किसी प्रकार की व्याख्या की। अर्थात्, एक या अधिक सुसमाचार दूसरे सुसमाचारों

में से एक या अधिक का उपयोग कर रहे थे। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच किसी प्रकार की नकल या उधार लेने या संबंध है।

और यह शब्दों में समानता का कारण है। फिर, इसमें महत्वपूर्ण क्या है? यह कथा है. यह किसी भाषण का उद्धरण नहीं है.

यह स्वयं लेखकों की कथात्मक टिप्पणी है। तो, सामान्य व्याख्या यह है कि शाब्दिक रूप से किसी प्रकार का संबंध है। इनमें से एक या अधिक लेखक दूसरे पर निर्भर हैं।

अब, अलग-अलग तरीके हैं, बिंदु संख्या दो तरीके से इसे समझाया गया है। आपके नोट्स में बिंदु संख्या दो, सेंट ऑगस्टीन, प्रारंभिक चर्च पिताओं में से एक, सेंट ऑगस्टीन ने सोचा था, और यह आपके न्यू टेस्टामेंट, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक में सुसमाचार के क्रम के लिए जिम्मेदार हो सकता है। सेंट ऑगस्टीन ने सोचा कि मैथ्यू पहले लिखा गया था।

मुझे नहीं पता कि मेरे नोट्स में यह है या नहीं। नहीं, सेंट ऑगस्टीन ने सोचा कि मैथ्यू पहले लिखा गया था और मार्क बाद में लिखा गया था और मैथ्यू को अपने स्रोतों में से एक के रूप में इस्तेमाल किया गया था।

और फिर ल्यूक को तीसरा लिखा गया और ल्यूक ने वास्तव में मार्क और मैथ्यू दोनों से उधार लिया था। तो, मैथ्यू सबसे पहले लिखा गया था, पहला सुसमाचार उसने स्वयं लिखा था। मार्क साथ आया और मैथ्यू को अपने स्रोतों में से एक के रूप में, अपने आधार के रूप में उपयोग करते हुए अपना सुसमाचार लिखा।

और फिर ल्यूक ने तीसरा लिखा और जब उसने लिखा, तो उसने मैथ्यू और मार्क दोनों को अपने मुख्य स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया। पुनः, यह दृष्टिकोण संभवतः इस बात का कारण है कि आपके पास सुसमाचार उसी क्रम में क्यों हैं जिस क्रम में वे घटित होते हैं, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक। शायद नये नियम में इसका एक कारण है।

यह एक संभावना है. हालाँकि, प्रमुख दृष्टिकोण, जिस पर अधिकांश लोग आज भी कायम हैं, इस तरह दिखता है। मार्क पहला सुसमाचार लिखा गया था और मैथ्यू और ल्यूक दोनों ने मार्क को अपने आधार के रूप में इस्तेमाल किया था।

इसलिए, मार्क ने स्वयं ही लिखा, पहला सुसमाचार लिखा गया था, और फिर मैथ्यू और ल्यूक दोनों के पास मार्क तक पहुंच थी और उन्होंने मार्क को अपने स्वयं के सुसमाचार को लिखने के लिए आधार के रूप में इस्तेमाल किया। इन अंतरों को समझने का यही सबसे आम तरीका है। तो, मार्क को पहले लिखा गया होगा, मैथ्यू और ल्यूक दोनों ने एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से मार्क का इस्तेमाल किया।

मैथ्यू और ल्यूक शायद नहीं जानते थे कि एक-दूसरे सुसमाचार लिख रहे थे। वे एक दूसरे पर भरोसा नहीं कर रहे थे. वे स्वतंत्र रूप से लिख रहे थे लेकिन उन दोनों की मार्क तक पहुंच थी।

और यही मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानताएं बताता है। अब, मैं इस चार्ट पर आगे बढ़ना चाहता हूं। आप अपने नोट्स में मार्क द्वारा पहले लिखी गई बात के अंतर्गत दूसरी बात देखेंगे।

तो, यहाँ मार्क है। इसका उद्देश्य इस तथ्य को प्रतिबिंबित करना है कि यह चार्ट आपको सुसमाचारों के बीच संबंध को समझने का एक सामान्य तरीका दिखाएगा। मार्क को पहले लिखा गया होगा, और रुकिए, मैं इसे थोड़ी देर में समझाऊंगा, और फिर मैथ्यू और ल्यूक ने अलग-अलग और स्वतंत्र रूप से मार्क का उपयोग किया होगा।

अब, आप पूछ सकते हैं, तो वे मार्क को उधार क्यों लेंगे? हम इसे बस एक क्षण में देखेंगे लेकिन चर्च में दूसरी शताब्दी के आरंभ में एक प्रसिद्ध लेखक ने वास्तव में मार्क को पीटर का करीबी सहयोगी और दुभाषिया बताया था। इसलिए, पीटर को पीटर की प्रमुखता दी गई। याद रखें, वह उन व्यक्तियों में से एक था जो उस समय पहाड़ पर गए थे जब उन ग्रंथों में यीशु का रूपांतर हुआ था जो हमने अभी दिखाया था।

इसलिए पीटर की प्रमुखता को देखते हुए, यदि मार्क पीटर का दुभाषिया है और पीटर का करीबी सहयोगी है, तो पहली शताब्दी में पीटर के कद को देखते हुए, यह पर्याप्त कारण हो सकता है कि मैथ्यू और ल्यूक उसके सुसमाचार को एक तरह से उपयोग करना चाहेंगे। अपने लिए एक आधार. इसलिए मार्क को पहले लिखा गया, मैथ्यू और ल्यूक को उसके बाद मार्क लिखा गया। अब, जब आप सुसमाचार पढ़ते हैं तो एक और दिलचस्प बात आपको पता चलती है कि मैथ्यू और ल्यूक में बहुत सारी सामग्री है जो आपको मार्क में नहीं मिलती है।

उदाहरण के लिए, पर्वत पर उपदेश। मार्क में पहाड़ी उपदेश का कोई रिकॉर्ड नहीं है, फिर भी ल्यूक और मैथ्यू दोनों के पास यह है। और यह इंगित करता है, शब्दांकन फिर से बहुत, बहुत, बहुत करीब है।

अब रास्ता, और भी जगहें हैं। ऐसे अन्य स्थान भी हैं जहां मैथ्यू और ल्यूक के पास ऐसी सामग्री है जो बहुत समान है, लेकिन आपको यह मार्क में कहीं नहीं मिलती है। आप उसे कैसे समझायेंगे? खैर, विद्वानों ने मनगढ़ंत बात कही है कि इसे Q कहा जाता है। Q शब्द का अर्थ केवल जर्मन शब्द स्रोत है।

इस बात पर असहमति है कि क्या यह लिखा गया था या यह मौखिक था या कुछ और, और मुझे इसका पता लगाने में कोई दिलचस्पी नहीं है। वास्तव में, विद्वानों ने अनुमान लगाया है, वे एक ऐसे समुदाय के साथ भी आए हैं जिसने क्यू का निर्माण किया है और क्यू का समुदाय क्या मानता है। वे अटकलों के ऊपर अटकलों का अंबार लगा देते हैं।

मेरा तात्पर्य केवल इतना है कि क्यू का तात्पर्य उस सामग्री से है जो आपको मैथ्यू और ल्यूक में मिलती है, जैसे कि सरमन ऑन द माउंट, लेकिन आपको यह मार्क में कहीं नहीं मिलती है। या जन्म कथा, यीशु के जन्म की कथा जो मैथ्यू और ल्यूक में पाई जाती है, लेकिन आप इसे मार्क में नहीं पाते हैं। फिर से, विद्वान इसे निर्दिष्ट करने के लिए Q शब्द का उपयोग करते हैं।

तो, इससे पता चलता है कि मार्क को सबसे पहले शायद पीटर के करीबी सहयोगी के रूप में पीटर की शिक्षा और उपदेश को दर्शाते हुए लिखा गया था। यह देखते हुए, मैथ्यू और ल्यूक ने अपने स्वयं के सुसमाचार के निर्माण में मार्क को अपने प्राथमिक स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया होगा, और मैथ्यू और ल्यूक के पास शायद किसी अन्य दस्तावेज़ या जानकारी के किसी अन्य निकाय तक पहुंच थी, जिसे विद्वान क्यू कहते हैं, जो आपको मैथ्यू में मिलने वाली सामग्री का हिसाब देगा। और ल्यूक, पहाड़ी उपदेश की तरह, लेकिन आप इसे मार्क में कहीं भी नहीं पाते हैं। तो फिर, इसका उद्देश्य यह है कि मुझे किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने में कोई दिलचस्पी नहीं है।

यह बस इतना महत्वपूर्ण है कि जब आप सुसमाचार पढ़ते हैं तो आप जानें कि वे इतने समान क्यों हैं। क्या चल रहा है? हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बीच समानता को कैसे समझा सकते हैं? अब, मार्क को प्रथम सुसमाचार के रूप में देखने के कारणों पर वापस आते हैं। अधिकांश लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि मार्क पहले लिखा गया था? सबसे पहले, क्या मैथ्यू और ल्यूक अक्सर मार्क को शांत करते प्रतीत होते हैं? विशेष रूप से जब मार्क इस तरह से लिखता है जो थोड़ा अजीब हो सकता है या इस तरह से जिसे गलत समझा जा सकता है, तो आप अक्सर मैथ्यू और ल्यूक को स्पष्ट करने के लिए उसे शांत करते हुए पाते हैं। उदाहरण के लिए, एक जगह, यीशु एक अमीर युवा शासक के साथ बातचीत कर रहे हैं, और अमीर युवा शासक यीशु को मूल रूप से एक अच्छे शिक्षक की तरह बुलाता है, मार्क में यीशु, यीशु जवाब देते हैं, आप मुझे अच्छा क्यों कहते हैं? इसका क्या तात्पर्य हो सकता है? जब यीशु कहते हैं, तुम मुझे भला क्यों कह रहे हो? मेरा मतलब है, इससे शायद कोई क्या निष्कर्ष निकाल सकता है? हाँ, यीशु अच्छे नहीं हैं।

तुम मुझे अच्छा क्यों कह रहे हो? मैं नहीं हूँ। मार्क का यह मतलब नहीं था, लेकिन इसे इस तरह से लिया जा सकता है। मैथ्यू दिलचस्प बात यह है कि आप मुझसे यह क्यों पूछते हैं कि क्या अच्छा है? शायद, फिर से, एक संभावित ग़लतफ़हमी को दूर करने का प्रयास करने के लिए।

हो सकता है कि मैथ्यू ऐसा कहने का एकमात्र कारण न हो, लेकिन ऐसे उदाहरण हैं जहां मैथ्यू और मार्क मार्क को सघन या चिकना करते प्रतीत होते हैं या मैथ्यू और ल्यूक मार्क को सघन या चिकना करते प्रतीत होते हैं। आप यही अपेक्षा करेंगे. आप उम्मीद करेंगे कि यदि मैथ्यू और मार्क या मैथ्यू और ल्यूक मार्क से उधार ले रहे हैं, तो आप उम्मीद करेंगे कि वे चीजों को संक्षेपित और सुचारू कर देंगे।

आप यह उम्मीद नहीं करेंगे कि कोई व्यक्ति किसी बात को जटिल बना देगा या उसे और अधिक कठोर बना देगा या संभावित रूप से उसे गलत समझ लिया जाएगा। तो यही कारण है कि, उन कारणों में से एक कारण है कि कई लोग सोचते हैं कि मार्क पहले लिखा गया था। दूसरा, दूसरा कारण यह है कि अधिकांश मार्क मैथ्यू और ल्यूक दोनों में पाए जाते हैं।

मार्क के सुसमाचार का नब्बे प्रतिशत, सत्तानबे प्रतिशत मैथ्यू में पुन: प्रस्तुत किया जाता है। लगभग नब्बे प्रतिशत, अट्ठासी प्रतिशत ल्यूक में पुनरुत्पादित हो जाता है। फिर, आप यही अपेक्षा करेंगे।

मैथ्यू और ल्यूक अधिकांश मार्क का उपयोग करेंगे, लेकिन फिर वे अन्य सामग्री भी शामिल करेंगे। फिर, यह एक और बात है जिस पर बहुत से विद्वान यह तर्क देते हैं कि मार्क पहले लिखा गया था। अंतर, एक और, जब मैथ्यू, मार्क और ल्यूक समानांतर हैं, जब आप उन तीनों को देखते हैं, यानी मैथ्यू, मार्क और ल्यूक और उनकी शिक्षाओं की तुलना करते समय, मैथ्यू और ल्यूक लगभग कभी भी मार्क से असहमत नहीं होते हैं।

वे लगभग, मैथ्यू और ल्यूक लगभग कभी भी एक ही समय में मार्क से विचलित नहीं होते हैं। लेकिन कभी-कभी मैथ्यू और मार्क ल्यूक से करते हैं, और ल्यूक और मार्क मैथ्यू से करते हैं। यह कहने का एक जटिल तरीका है, यदि वे उधार ले रहे हैं यदि मैथ्यू और ल्यूक मार्क से उधार ले रहे हैं, तो आप यही उम्मीद करेंगे, कि एक साथ वे कभी भी असहमत नहीं होंगे या किसी भी तरह से मार्क से विचलित नहीं होंगे।

तो, यह सिर्फ एक और कारण है कि, जब आप तीन सुसमाचारों की तुलना करते हैं, तो आप मैथ्यू और ल्यूक को लगभग कभी भी मार्क से एक ही तरह से दूर जाते हुए नहीं पाते हैं। वे कहते हैं, यदि मैथ्यू और ल्यूक मार्क का उपयोग कर रहे हैं, तो आप यही उम्मीद करेंगे। इसलिए, निष्कर्ष में, मैं मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण नहीं मानने जा रहा हूँ।

इसके बजाय, मुझे लगता है कि हमारे लिए जो करना अधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि जब हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की तुलना करते हैं, तो यह ध्यान दें कि वे एक-दूसरे से कैसे भिन्न हैं। ध्यान देने के लिए, फिर से, यह ध्यान देने के लिए कि यह क्या है, प्रत्येक सुसमाचार दूसरों के विरुद्ध जोर देता प्रतीत होता है। फिर, जब मैं मैथ्यू और ल्यूक, उनकी क्रिसमस कहानी की तुलना करता हूं, तो ल्यूक के पास चरवाहों की कहानी क्यों है, लेकिन मैथ्यू के पास नहीं है? इसके बजाय, मैथ्यू में जादूगरों, या तथाकथित बुद्धिमान लोगों के यीशु के पास आने की कहानी शामिल है, और ऐसा लगता है कि वह चरवाहों की कहानी के बारे में नहीं जानता या उसकी परवाह नहीं करता।

ऐसा क्यों? हम इसका हिसाब कैसे देंगे? दोबारा, जब आप यहां हमारे उदाहरण पर वापस जाते हैं, जब मैं इन तीनों की तुलना करता हूं, तो ल्यूक के पास छह के बजाय आठ दिन क्यों होते हैं? और उसने यह क्यों उल्लेख किया कि वे प्रार्थना करने गए थे जबकि अन्य सुसमाचार लेखक नहीं गए? इसलिए मुझे यही करने में अधिक रुचि है। जब हमारे पास तीन लेख होते हैं जो एक ही विषय पर बोलते हैं और बात करते हैं, तो यह पूछना महत्वपूर्ण है कि ऐसा क्यों है कि वे इसे इस तरह प्रस्तुत करते हैं? वे क्या पाने की कोशिश कर रहे हैं? कैसे, जब हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की तुलना करते हैं, तो प्रत्येक सुसमाचार की धार्मिक विशिष्टताएँ क्या हैं जो सामने आती हैं और जिन पर जोर दिया जाता है? या तो अन्य सुसमाचार नहीं करते हैं, या कम से कम एक हद तक कि अन्य सुसमाचार नहीं करते हैं। और इसलिए जब हम मैथ्यू, मार्क और ल्यूक के माध्यम से आगे बढ़ना शुरू करते हैं तो मैं सुसमाचार को इसी तरह से देखने जा रहा हूं।

कभी-कभी हम विशिष्ट पाठों को देखेंगे, लेकिन मुझे इस बात पर ध्यान केंद्रित करने में अधिक रुचि है कि वे कौन से अद्वितीय धार्मिक विषय हैं जिन पर आप मैथ्यू, मार्क या ल्यूक को अपने सुसमाचारों को व्यवस्थित करने के तरीके पर जोर देते हुए पाते हैं, जिस तरह से वे कुछ चीजों पर जोर देते हैं , जिस तरह से वे यीशु को चित्रित करते हैं, आदि।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन अपना न्यू टेस्टामेंट इतिहास और साहित्य, व्याख्यान 6, शैली और सारांश प्रस्तुत कर रहे हैं।